''शैक्षिक अनुदेशन में पर्यावरण शिक्षा के नवीन संसाधन''

*प्रो. ग्रीष्मा शुक्ला
**निर्मला तापडिया

भूमिकाः–

आज का युग वैज्ञानिक युग है। मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष वैज्ञानिक खोजों पर्यावरणीय समस्याओं का हल, तथा अविष्कारों से प्रभावित है। पर्यावरण शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से मुक्त नही रह सका है। रेडियों, टेपरिकोर्डर, टेलिविजन, रेडियोविजन, लिंग्वाफोन, कम्प्यूटर, लेपटॉप, प्रोजेक्टर आदि का बढता हुआ उपयोग पर्यावरण शिक्षा को तकनीकी के निकट लाता जा रहा है पर्यावरण शैक्षिक कार्यक्रमों तथा गतिविधियों में तकनीकी का प्रयोग महत्वपूर्ण सुधार कर दिखाने की क्षमता रखता है इसका प्रयोग छात्र केन्द्रित वातावरण के रुप में प्रोत्साहित अपूर्व क्षमता रखता है।

प्राचीन काल में शिक्षा गुरु प्रधान थी। इसके पश्चात् मौखिक प्रधान व लिखित प्रधान होने लगी समय के अनुसार परिर्वतन के साथ मुद्रण के अविष्कारों के साथ आयी पुस्तकें उपलब्ध होने लगी इलेक्ट्रोनिक्स तकनीकी के क्षेत्र मे आये विकासशील परिवर्तन का उपयोग पर्यावरण शिक्षा में होने लगा।

शैक्षिक अनुदेशन प्रक्रियाएँः–

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहज सरल स्पष्ट व प्रभावशाली बनाने के लिए वैज्ञानिक तकनीकी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा विधियों का उचित प्रयोग शिक्षा तकनीकी कहलाता है। जैसे–जैसे नवीनतम खोजे तथा अन्वेषण आते रहे वैसे ही शैक्षिक तकनीकी के अर्थ, परिभाषा तथा स्वरुप में भी परिवर्तन होने लगा।

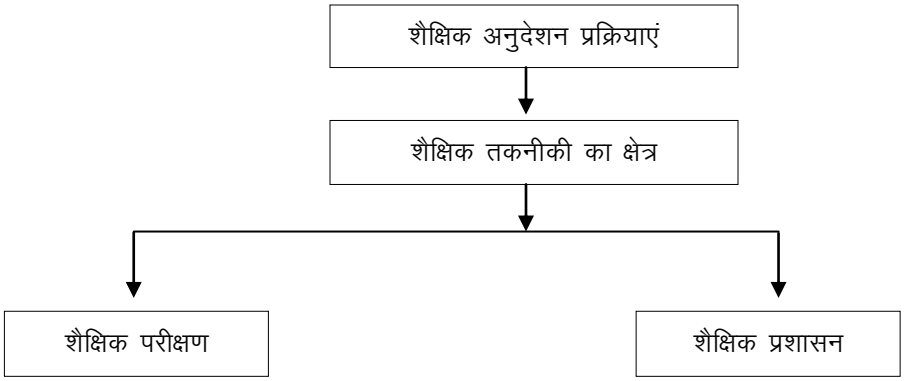

लेम्सडेन के अनुसारः– शैक्षिक तकनीकी के दो उपागम हैः–

(1) कठोर शिल्प उपागम (2) कोमल शिल्प उपागम

कठोर शिल्प उपागमः– को, श्रव्य–दृश्य उपागम कहा जाता है। यह उपागम भौतिक विज्ञान तथा इजीनियरिंग के सिद्धान्तों तथा व्यवहारों पर आधारित है इस उपागम में शिक्षण प्रक्रिया का मशीनीकरण करके कम समय में अधिक छात्रों को शिक्षित करने का प्रयास चल रहा है। इसमें शोध कार्यों में प्रपत्रों के संकलन, विश्लेषणीकरण आदि के लिए कम्प्यूटर तथा मशीनों का उपयोग भी इसी उपागम को महत्व देता है।

कोमल शिल्प उपागम :– में शिक्षण सहायक सामग्री चौक, डस्टर, लपेटश्यामपट्ट आदि आते है।

शिक्षण और अधिगम के क्षेत्र में मशीनों तथा कठोर शिल्प उपागमो का चयन तथा प्रयोग करना ही पर्यावरण शिक्षा तकनीकी में नवाचार कहलाता है यह तीन बातों पर विशेष बल देता है।

(1) पर्यावरण ज्ञान का संचय करना (2) पर्यावरण ज्ञान का प्रसारण करना

(3) पर्यावरण ज्ञान का विस्तार करना

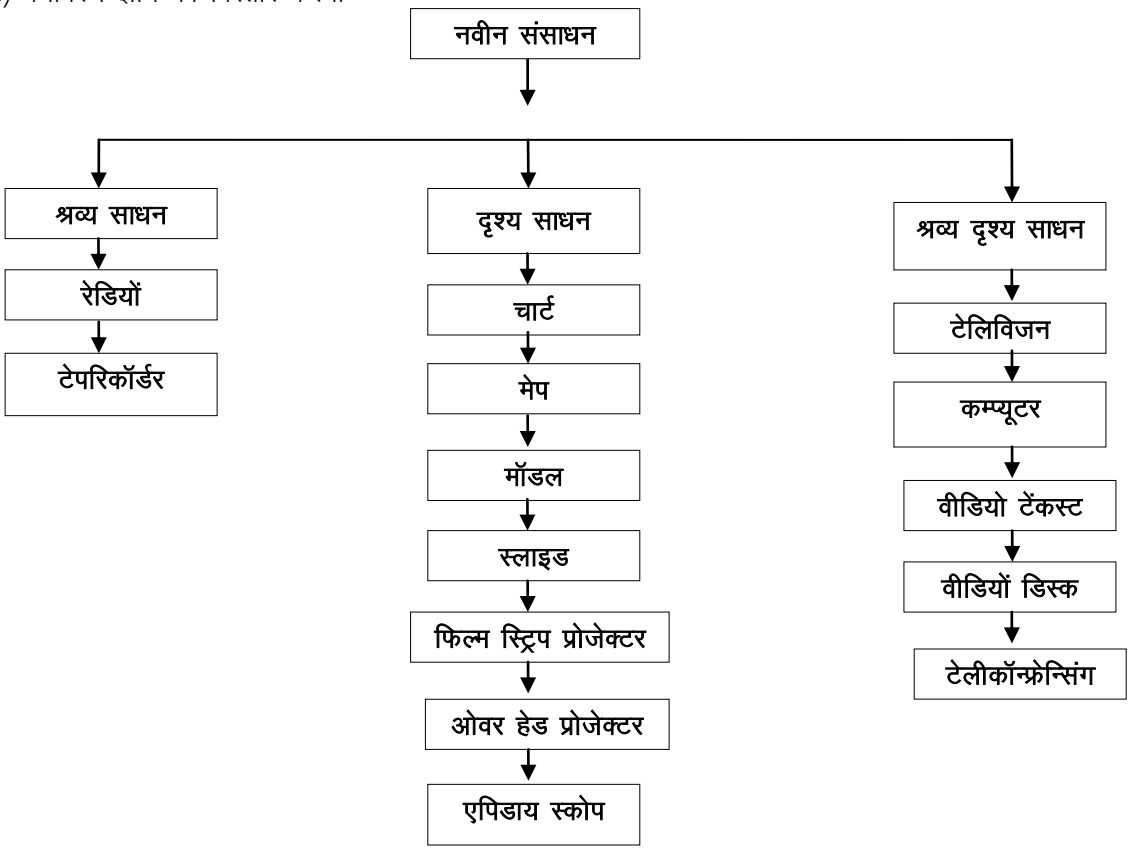

इस तकनीकी के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुविधाजनक कर दिया। अध्यापक कम से कम समय में एक साथ अधिक छात्रों को शिक्षा प्रदान कर सकता हूँ।

***निर्देशिका**
****शोधार्थी**
स्कूल ऑफ एज्यूकेशन
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. *झा., कमलेश एवम् सरुपरिया सीमा, (2011). आधुनिक शैक्षिक तकनीकी, कल्पना पब्लिकेशन, जयपुर।*
2. *पालीवाल, शिखा एवं सिंह प्रसून (2016), सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी पुनीत प्रकाशन, जयपुर।*
3. *सिंह, मया शंकर, (2006), शैक्षिक प्रबन्धन एवं शिक्षण तकनीकी अध्ययन पब्लिशर्स, नई दिल्ली।*
4. *मित्तल, संतोष एवं अग्रवाल मीनू. (2004), पर्यावरण शिक्षा, नव चेतना पब्लिकेशन, जयपुर।*
5. *वशिष्ठ, कमला (2018), पर्यावरण शिक्षण, यूनिर्वसिटी बुक हाउस, जयपुर।*
6. *गोयल, एम. के. (2014) पर्यावरण शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*